मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

# बहाई समाचारपत्र

Licenced to post without Pre-Payment Posted at NDPSO
New Delhi on 10/11.03. 2021

**Sender's Address:**
**6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA**

वर्ष : 57 अंक 03 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
मार्च 2021 बहाई वर्ष : 177–78

### विश्व न्याय मन्दिर

सभी के समक्ष यह स्पष्ट होगा कि वैश्विक योजनाओं की वर्तमान श्रृंखला द्वारा गमन में लायी गयी प्रक्रिया, किसी वर्ग या धार्मिक पृष्ठभूमि पर ध्यान दिये बगैर, किसी जातीयता या नस्ल की चिन्ता किये बगैर, किसी लिंग या सामाजिक दर्जे का विचार किये बगैर, अपने तरीकों में तथा उपयोग में लायी जाने वाली अपनी पद्धतियों में, प्रत्येक मानव समूह में क्षमता का निर्माण करने का प्रयास करती है, ताकि वे उठ खड़े हों और सभ्यता की प्रगति में योगदान दें।

*–28 दिसम्बर 2010*

## झारखण्ड की गतिविधियों की झलक

• पिछले महीने सलाहकार की उपस्थिति में हुई संस्थागत बैठक से प्राप्त सीखों एवं योजनाओं के आधार पर झारखण्ड के विभिन्न समुदायों/क्लस्टरों (जैसे – जमशेदपुर, आसनबनी, पटमदा, तमाड़, गम्हरिया, घाघरा, मानगो इत्यादि) में नये बहाई बाल समूह, किशोर समूह, अध्यनवृत्त समूह, भक्तिपरक सभाओं का आयोजन किया गया। ज्ञात हो की मित्रों ने अपने समुदायों का निरीक्षण करने पर पाया कि कुछ बच्चे, किशोर, युवा एवं परिवार ऐसे हैं जो हमारी गतिविधियों में शामिल नहीं हैं। ऐसे में उन्होंने एक सूची तैयार कर उनके परिवारों से वार्तालाप करने की योजना बनाई। साथ ही, उन्होंने कुछ समूह भी तैयार किये जो उनसे वार्तालाप करेंगे। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में प्रथम वर्ग के सह–शिक्षक की अवधारणा को ध्यान में रखते हुए अधिकतर अध्ययनवृत्त समूह का आयोजन किया गया। पारिवारिक समूह की अवधारणा के आधार पर अधिक से अधिक भक्तिपरक सभाओं का आयोजन किया गया। वर्तमान में झारखण्ड में 44 पारिवारिक समूहों में भक्तिपरक सभाओं का आयोजन किया जा रहा है तथा बहाई बाल समूह–159, किशोर समूह–84, अध्ययनवृत्त समूह–52, भक्तिपरक सभा–1705 संचालित की जा रही हैं। इन नई गतिविधियों के गठन के सन्दर्भ में 3–4 नये समुदायों की भी पहचान की गयी और दल बनाकर इन समुदायों में भ्रमण किया गया।



**झारखण्ड में आयोजित किशोर कक्षाओं में सामूहिक अध्ययन करते हुए**



**बहाई मित्र गांव के लोगों को मूल–गतिविधियों के बारे में समझाते हुए**

*शेष पृष्ठ 2 पर*

### इस अंक में



## स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर का शिलान्यास

राज्य बहाई परिषद्, बिहार के तत्वावधान में बिहारशरीफ़ के हरगावाँ समुदाय में आयोजित शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान 21 फरवरी 2021 को स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर की आधारशिला रखी गयी। समारोह में स्थानीय गणमान्य लोग, बहाई समुदाय के प्रतिनिधिगण और बिहार शरीफ समुदाय–समूह के निवासी शामिल थे। इस अवसर की शोभा बढ़ाने के लिए तीन महाद्वीपीय सलाहकार भी उपस्थित थे।

ज्ञातव्य हो कि 'तमसो माँ ज्योतिर्गमय' की पुरातन संस्कृति के अनुरूप महाद्वीपीय सलाहकार, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, भारत के प्रतिनिधि एवं स्थानीय मुखिया प्रतिनिधि आमोद कुमार के सुकोमल कर–कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर उक्त पावन कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत् कुछ चिह्नित मित्रों एवं बाल व किशोर समूह द्वारा की गयी बहाई प्रार्थनाओं से हुई। तत्पश्चात् 'अतिथि देवो भवः' की संस्कृति को आत्मसात् करते हुए लोकोत्तर चेतन–सम्पन्न अतिथियों का सुस्वागत स्थानीय आध्यात्मिक सभा, हरगावाँ द्वारा स्वागत गान से किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ मंच संचालन करते हुए राज्य बहाई परिषद्, बिहार के सचिव ने इस अलौकिक उपहार के लिए सर्वप्रथम अपने पुरातन सौन्दर्य एवं विश्व न्याय मंदिर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं आभार प्रकट किया तथा अपने वक्तव्य में कहा कि–धर्म के क्रमिक इतिहास में मशरिकुल–अज़कार अर्थात् ईश्वर के स्मरण का उद्गम स्थल केवल उपासना स्थल नहीं है बल्कि यह एक अनूठी अवधारणा, एक अनूठी संस्था है तथा ईश्वर के नये युग की शिक्षाओं का एक ऐसा प्रतीक चिह्न है; जो सामाजिक रूपांतरण एवं आध्यात्मिक प्रगति के आदर्शों एवं उसके प्रतिमानों को मूर्तिमान करता है। उन्होंने यह भी कहा कि–हरगावाँ समुदाय में बनने वाला अनुपम एवं उत्तुंग उपासना मन्दिर मानव जीवन के दो अनिवार्य एवं अविभाज्य आयाम– 'सेवा एवं उपासना' की संस्कृति को बढ़ावा देगा तथा मानवजाति की एकता को संवर्द्धित करेगा साथ ही बहाई धर्म के समस्त आधारभूत सिद्धांतों को संकेतित करेगा कि–धार्मिक सत्य निरपेक्ष नहीं बल्कि सापेक्ष है और दिव्य प्रकटीकरण अंतिम नहीं बल्कि प्रगतिशील है क्योंकि ईश्वर एक है, समस्त मानवजाति एक है, सभी धर्मों की नींव एक है तथा सभी ईश्वरावतारों के प्रकटीकरण का पद प्रयोजन भी एक ही है–सार्वभौम सत्ता का प्रतिनिधित्व करना। यह ईश्वर की वाणी को उदात्त करने वाला तथा उनकी मधुर सुरभियों का प्रसार करने वाला एक ऐसा नयनाभिराम उपासना



**बिहारशरीफ में बनने जा रहे स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर की आधारशिला रखते हुए**

*शेष पृष्ठ 3 पर*

# कोल्हापुर में क्लस्टर स्तर की तैयारी के लिए बैठक का आयोजन

महाराष्ट्र में कोल्हापुर ने कोल्हापुर और उसके आस–पास के समूहों के लिए दो क्लस्टर स्तरीय वार्षिक योजना कार्यक्रम का आयोजन 20 और 21 फरवरी 2021 को किया। महाराष्ट्र में आयोजित होने वाले क्षेत्रीय स्तर की वार्षिक बैठक के लिए तैयारी करने और योजना बनाने के लिए इसको आयोजित किया गया। इस बैठक में 17 प्रतिभागियों और परिषद नवंबर 2020 के संदेश में दिये गए मार्गदर्शन के आधार पर किया गया। साथ के समुदायसमूहों जैसे कि कागल, हाथकलंगे, कोगिल गांव से बड़े पैमाने पर विकास और उनके संबंधित समुदायसमूहों की गतिविधियों के लिए योजना बनाई गई। प्रतिभागियों ने शैक्षिक गतिविधियों, समुदाय निर्माण गतिविधियों, गृहभ्रमण, भक्तिपरक बैठकें, ग्रेड गतिविधियाँ, मानव



कोल्हापुर में आयोजित बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

के सचिव ने भाग लिया। दो–दिन के इस कार्यक्रम के दौरान मित्रों ने विकास के संबंध में विश्व न्याय मन्दिर के मार्गदर्शन पर अध्ययन और चर्चा की। गांवों और समुदायसमूहों के समूह की अवधारणा, समन्वय योजना, बड़े पैमाने पर विकास, संतृप्ति और नए क्लस्टर तक पहुंचना, पर सहायक मण्डल सदस्य द्वारा मार्गदर्शन दिया गया। यह विशेष रूप से 25 संसाधन विकास, स्तर प्रशिक्षण, कोष, उन्नीस दिवसीय भोज, पारिवारिक समूह आदि से संबंधित तालिकाओं को भरा और परामर्श किया। उन्होंने नए गाँवों तक पहुंचने के बारे में भी चर्चा की। इस वर्ष अब्दुल–बहा की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में रूही पुस्तक–8 के अध्ययन के साथ समन्वयकों और सहायकों के साथ रूही पुस्तक–10 के अध्ययन की योजना बनाई गई।

# झारखण्ड की गतिविधियों की झलक

*पृष्ठ 1 का शेष*

• 10 से 20 फरवरी 2021 के बीच में झारखण्ड के विभिन्न क्लस्टरों जैसेः–जमशेदपुर, आसनबनी, पटमदा, मानगो, तमाड़, गम्हरिया, बुंडू इत्यादि में नये एवं पुराने समुदायों की पहचान कर उनमें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शिक्षण किया गया। समुदाय की वास्तविकताओं के आधार पर इन समुदायों में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शिक्षण किया गया। प्रत्यक्ष शिक्षण के दौरान परिवारों को सीधे युगावतार बहाउल्लाह एवं उनकी शिक्षाओं को बताया गया एवं अप्रत्यक्ष शिक्षण में परिवारों को बहाइयों द्वारा समुदाय निर्माण हेतु की जा रही गतिविधियों के बारे में बताया गया। समुदायों जैसेः– तिल्ला, ओम नगर, फुलवारी टोली, जोन 8, पोरागोदम, विवेक कॉलोनी, सोनारी इत्यादि जैसे समुदायों में बच्चे, किशोरों एवं युवाओं की पहचान की गयी और उनसे एवं उनके परिवारों में जाकर शिक्षण किया। इस दौरान कुछ परिवारों में नई प्रार्थनाएँ भी शुरू हुईं, जिसके होने से परिवारों को एक अलग आनंद प्राप्त हुआ और उन्होंने दुबारा आकर करने का भी निमंत्रण दिया। इस दौरान भ्रमण दलों को कई प्रकार की चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा जैसे कुछ अपने धर्म में दृढ़ परिवारों एवं व्यक्तियों द्वारा मना किया जाना, युवाओं द्वारा इंकार करना इत्यादि। परंतु मित्रों ने प्रयास करना नहीं छोड़ा देर सवेर मित्रों के लगातार प्रयास से धीरे धीरे इन समुदायों में गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं।

# समाचारचित्र



असम के गोरेश्वर समुदाय के श्री जीतपाल कलिता और सुश्री प्रियंका कुमारी का विवाह बहाई विधिविधान के अनुसार 15 जनवरी, 2021 को सम्पन्न हुआ।



मध्यप्रदेश के पड़रिया, भोपाल की कुमारी शालिनी और पुणे के श्री अजय बाघ का विवाह 20 फरवरी, 2021 को पड़रिया में भोपाल की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सहयोग से बहाई विधानों के अनुसार बड़े ही हर्षोउल्लास से सम्पन्न हुआ।



बिहार के बिहार शरीफ में बनने वाले स्थानीय बहाई उपासना मंदिर के पावन शिलान्यास के उपलक्ष्य में मध्य प्रदेश के इंद्रपुरी स्थित बहाई भवन में मित्रों द्वारा विशेष प्रार्थनाएँ की गई।

## हुकूकुल्लाह के उप–न्यासियों की नियुक्ति

निम्नलिखित मित्र – श्री दिनेश राव, श्री प्रेम सिंह, श्रीमती डीजेना सूनावाला और श्री पोन्नुसामी वेंकटेशन को पांच वर्ष की अवधि के लिए भारत के लिए हुकूकुल्लाह के उप–न्यासी के रूप में सेवा देने के लिए नियुक्त किया गया है।

# स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर का शिलान्यास

*पृष्ठ 1 का शेष*

मन्दिर होगा जो वैविध्य पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए समर्पित होगा तथा इसका निर्माण अस्तित्व के संसार में जितना संभव हो सकता है पूरी सादगी, महिमा, प्रतिष्ठा एवं परम–भव्यता के साथ किया जायेगा। यह आध्यात्मिक यथार्थ एवं जीवन के मूलभूत प्रश्नों पर गहन चिन्तन करने का आश्रय स्थल होगा जहाँ निरंतर ईश्वर की स्तुति और महिमा का गान होगा। दिव्य सम्पुष्टियों को आकर्षित करने वाला यह चुम्बकीय स्थल विविधता में एकता के सिद्धांत को तथा बंधुता, सौहार्द एवं समरसता के ताने–बाने को मजबूत करेगा क्योंकि युगावतार बहाउल्लाह का प्रकटीकरण समस्त मानवजाति के लिए जिस दिव्य सभ्यता का संवाहक है उसके एक सशक्त प्रतीक और अन्तर्निहित तत्व के रूप में उपासना मन्दिर जिस समुदाय में निर्मित होता है वह उस समुदाय का ध्रुवीय केन्द्रबिन्दु होता है, जहाँ की पावन सुरभियाँ सचरित्र लोगों की आत्माओं को नवजीवन प्रदान करती हैं।




**सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान एक बालिका नृत्य प्रस्तुत करते हुए**

कार्यक्रम के दौरान भारत की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के प्रतिनिधि ने कहा कि–हमारे विविध समाज में एकता और सद्भाव भारत की 'वसुधैव कुटुम्बकम' की गौरवशाली वैदिक परंपरा के माध्यम से व्यक्त किया गया है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। अतएव, यह उपासना मन्दिर वसुधैव कुटुम्बकम का एक जाज्वल्यमान प्रतीक होगा जहाँ हर कोई चाहे वह किसी भी समुदाय, जाति, रंग या पंथ का हो अपने रचयिता से संवाद स्थापित करेगा और इस परंपरा की पुष्टि बहाउल्लाह के इन शब्दों में प्रकट होती है कि–"एक दूसरे को अजनबी मत समझो, यह एक ही वृक्ष के फल और एक ही शाखा के पत्ते हैं साथ ही एकता का प्रकाश इतना शक्तिशाली है कि यह सम्पूर्ण पृथ्वी को प्रकाशित कर सकता है। अपने उद्‌बोधन में प्रतिनिधियों ने उपासना मन्दिर एवं मानव जीवन के उद्देश्यों के अलावा स्वामित्व विषयक् पहलुओं पर भी प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में उपस्थित महाद्वीपीय सलाहकार ने जमाल एफ़ेंदी के बिहार आगमन एवं बिहार में हुए बहाई धर्म का अभ्युदय तथा इस अभ्युदय एवं आविर्भाव कालखंड से लेकर वर्तमान पाँच वर्ष के आखिरी चक्र तक की विकास यात्रा तथा उससे जुड़े हुए ऐतिहासिक तथ्यों का जिक्र करते हुए बताया कि जब सैकड़ों लोग यथा–युवा, वृद्ध, महिला, पुरुष, किसान, मजदूर, छात्र, डॉक्टर, व्यापारी आदि प्रतिदिन एक साथ इस उपासना मन्दिर में एकत्रित होंगे और सर्वशक्तिमान की ओर उन्मुख होंगे तो इससे एकता का बंधन और सुदृढ़ होगा। इसी कड़ी में संविदा की शक्ति एवं मशरिकुल– अज़कार की अवधारणाओं एवं संकल्पनाओं से अवगत कराया।

ग्राम पंचायत राज हरगावॉं के मुखिया प्रतिनिधि आमोद कुमार ने अपना उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि–बहरहाल हमारा समाज कई जाति, धर्म एवं वर्ग में विभाजित है किन्तु, दशकों से बहाई शिक्षाओं ने यहाँ के लोगों को एकजुट करने में अपनी महती भूमिका निभायी है; विशेषकर बच्चों, किशोरों एवं युवाओं को शैक्षिक एवं समुदाय निर्माण की प्रक्रिया में जोड़कर। अब इस क्षेत्र को बहाई उपासना मन्दिर के रूप में जो दिव्य उपहार प्राप्त हुआ है उससे आशा की एक और नई किरण दिखायी दे रही है कि इससे स्थानीय समुदाय और ज्यादा लाभान्वित होगा और निरंतर प्रगति करते हुए समृद्धि प्राप्त करेगा।

उपासना मन्दिर की परिकल्पना से जुड़े विचारों को साझा करते हुए 'स्पेस मैटर्स' से संबद्ध आर्किटेक्ट ने कहा कि–यह उपासना का केन्द्र गुम्बदनुमा होगा तथा गुम्बद पर की गई नक्काशी मधुबनी कला की मिशाल स्थापत्य संरचना की दृष्टि से अलौकिक होगी तथा इसमें मेहराबों और रोचक डाटों की संरचना पंखों अथवा पत्तियों जैसे ताने–बाने का निर्माण व उनमें बने सुराख दिन में प्रकाश के भीतर आने और निशा काल में बाहर निकलने की सुविधा होगी इसके अतिरिक्त बिजली की कम खपत, ग्रीष्मकाल में भी शीतलता की अनुभूति हेतु छायादार वृक्ष आदि लगाने की भी बात शिल्पकारों ने बतायी।

स्थानीय सहायक मंडल सदस्य ने भी समुदाय निर्माण की प्रक्रिया एवं सामाजिक रूपांतरण पर अपने विचार व्यक्त किये। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान मित्रों ने अपनी भक्ति संगीत की मधुर स्वर लहरी पर जहाँ लोगों की भरपूर तालियाँ बटोरी वहीं दूसरी ओर किशोर एवं बाल समूह द्वारा प्रस्तुत भरत नाट्यम एवं रिकॉर्डिंग डान्स ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्थानीय मन्दिर समिति का योगदान सर्वोपरि रहा।

उक्त उपासना मन्दिर की आधारशिला राष्ट्रीय सभा के प्रतिनिधि, महाद्वीपीय सलाहकार, स्थानीय निवासी बच्चू महतो एवं परिषद् सदस्य के कर–कमलों द्वारा रखी गयी। अंत में स्थानीय आध्यात्मिक सभा, तेतरावॉं द्वारा धन्यवादज्ञापन एवं समापन प्रार्थना के साथ कार्यक्रम की पूर्णाहुति की घोषणा की गई। विदित हो कि समस्त कार्यक्रम के दौरान बिहार सरकार द्वारा कोविड–19 वायरस से संबद्ध जारी सभी दिशा–निर्देशों का पूर्णतया पालन किया गया।



**बिहारशरीफ में स्थानीय उपासना मन्दिर की आधारशिला कार्यक्रम में उपस्थित मित्रगण समारोह का आनन्द लेते हुए**

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.

**Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2021-22-23**
**Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20**

## बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के संबंध में बहाउल्लाह का विधान

**बहाई अंत्येष्टि–क्रिया के विधानों का सिंहावलोकन और इनकी उपयुक्तता**

### समाधि स्थल

वर्तमान समय में कोई निश्चित नियम बहाई समाधि स्थल बनाने के सम्बन्ध में नहीं है। फिर भी मास्टर अपनी एक पाती में, "इस बात पर बल देते हैं कि एक सुंदर समाधि स्थल का निर्माण करवाया जाये जो भव्य और आकर्षक दिखे" और कहते हैं कि "समाधियां एक–दूसरे से जुड़ी न हों, बल्कि प्रत्येक समाधि के चारों ओर फूलों की चादर बिछी हो।" वह यह भी संकेत देते हैं कि और भी मनोरम होगा अगर समाधि स्थल के बीच में एक फव्वारा हो और इसके चारों ओर और समाधि के चारों ओर भी सुन्दर वृक्ष लगाये जायें।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 20 फरवरी 1978 को लिखे पत्र से)

...नये समाधिस्थल के नक्शे पर विचार करते समय आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि अन्ततः बहाई वहाँ भूमिगत किये जायेंगे जो बहाई विश्व के किब्ले की ओर मुँह किये होंगे। इसलिये, यह अभीष्ट होगा कि आप समाधियों को इस प्रकार पंक्तियों में रखें कि मृतक के पाँव बहजी की ओर हों।

(विश्व न्याय मंदिर की ओर से एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 10 जून 2013 को लिखे गये पत्र से)

### पार्थिव अवशेष का उत्खनन और पुनर्दफन

आपके उस पत्र के उत्तर में–जिसमें अनुयायी के पार्थिव अवशेषों को उनकी समाधियों से स्थानान्तरित करने के सम्बन्ध में पूछा गया है, विश्व न्याय मंदिर ने हमें यह कहने का निर्देश दिया है कि बहाई विधान में इसकी अनुमति है कि पार्थिव अवशेष का उत्खनन किया जाये ओर फिर से भूमिगत किया जाये। फिर भी, विश्व न्याय मंदिर यह सोचता है कि मृत्यु–स्थल से एक घंटे की दूरी के अंदर भूमिगत कर देने के बहाउल्लाह के विधान का अनुपालन किया जाना चाहिये।

समाधियों को 30 साल अथवा ऐसी ही अवधि पर पट्टे पर लेने से सम्बन्धित जिस समस्या का पूर्वानुमान आप लगा रहे हैं उससे उठने वाली समस्या के संदर्भ में न्याय मंदिर का सुझाव है कि हालाँकि समाधि के ध्वस्त हो जाने या फिर किसी अन्य कारण से नष्ट हो जाने की स्थिति में पार्थिव अवशेष के स्थानान्तरण में कोई आपत्ति नहीं है, फिर भी यह विवेकयुक्त होगा कि स्थायी तौर पर बहाई गुलिस्तान के लिये जमीन का एक टुकड़ा खरीद लिया जाये या फिर पट्टे की अवधि बढ़ा दी जाये। दूसरे शब्दों में, यह बेहतर होगा कि एक बार पार्थिव अवशेष को भूमिगत कर देने के बाद उसमें कोई विघ्न न डाला जाये लेकिन अगर यह सम्भव न हो तो आपको हर सम्भव प्रयास करना चाहिये कि पार्थिव अवशेष को मृत्यु–स्थल से एक घंटे से अधिक की दूरी पर न ले जाया जाये और भूमिगत करने से सम्बन्धित बहाउल्लाह के विधान की भावना का सम्मान करते हुये मृत्यु के स्थान से बहुत दूर न ले जाया जाये।

(विश्व न्याय मंदिर द्वारा एक राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को 11 जनवरी 1979 को लिखे गये पत्र से)

क्रमशः

## ओडिशा के बहाईयों की गणमान्य व्यक्तियों से भेंटवार्ता

• ओडिशा राज्य बहाई परिषद की ओर से एक प्रतिनिधिमंडल ने ओडिशा के महामहिम राज्यपाल प्रोफेसर गणेशी लाल से 21 जनवरी 2021 को शिष्टाचार भेंट की। राज्यपाल से मिलने पर उन्हें बहाई साहित्य प्रदान किया गया। बहाई साहित्य प्राप्त करने पर उन्होंने परम पावन पुस्तक सहित बहाउल्लाह के लेखों के माध्यम से बहाई धर्म के बारे में और अधिक जाने की इच्छा व्यक्त की। प्रभुधर्म के मूल सिद्धांतों के बारे में जानने में उनकी रुचि अत्यंत वास्तविक और उत्साहजनक थी। इसके उपरान्त प्रतिनिधिमंडल राज्यपाल के सचिव एवं आयुक्त से मिला और उन्हें एक आवेदन पत्र सौंपा, जिसमें बहाई गुलिस्तान की भूमि के आवंटन के लिए महामहिम की सिफारिश का अनुरोध किया गया।



**बहाई प्रतिनिधिमण्डल राज्यपाल को पुष्प भेंट करते हुए**

• ओडिशा की राज्य बहाई परिषद के बाहरी मामलों के विभाग की ओर से चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने ओडिशा राज्य के उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति एस. मुरलीधर से 8 फरवरी, 2021 को मुलाकात की। जब उन्हें बहाई साहित्य भेंट किया गया तो उन्होंने बहाई उपासना मन्दिर की अनेक यात्राओं को याद करते हुए बहाई धर्म से परिचित्र होने की बात बताई। प्रतिनिधिमंडल ने बहाई शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ–साथ बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था की अवधारणा के बारे में भी बताया। उन्होंने ओडिशा के बहाई समुदाय के सदस्यों से मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की। प्रतिनिधिमंडल को उच्च न्यायालय के रजिस्टर्ड जनरल श्री दास को प्रभुधर्म की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताने का अवसर मिला।

**● निधन**

## श्री पिंटू प्रसाद



हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि राष्ट्रीय कार्यालय के आईटी विभाग में सेवारत श्री पिंटू प्रसाद का 28 फरवरी 2021 को अल्पायु में असमय निधन हो गया। उन्होंने लगभग दस वर्षों तक इस विभाग में अपनी सेवायें दीं। प्रभुधर्म के विकास में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो सदैव याद रखा जायेगा। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

**कुल पृष्ठ संख्या–4**

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at NDPSO New Delhi on 10/11.03. 2021
**Sender's Address:**
**6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.**
**New Delhi - 110 001 - INDIA**

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)